The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 6 | June 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य: स्त्री विमर्श एवं भूमंडलीकरण का प्रभाव

ज्योति

शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

jyotikhutela8@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

साहित्य, स्त्री, समाज, नारीवाद

ABSTRACT

भूमंडलीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को संसार की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना है। वस्तुओं, सेवाओं, व्यक्तियों और सूचनाओं का राष्ट्रीय सीमाओं के आरपार स्वतन्त्र रूप से संचरण ही भूमंडलीकरण कहलाता है। भूमंडलीकरण जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है -भू यानि पृथ्वी, मण्डल यानि समूह, अर्थात एकीकरण करना। इस प्रकार भूमंडलीकरण शब्द को समझा जा सकता है। भूमंडलीकरण अंग्रेजी के ग्लोबलाईजेशन का हिंदी रूपांतरण है। कहा जाता है कि भूमंडलीकरण की संकल्पना अमेरिका ने दिया और यह 1990 में धीरे धीरे भारत में प्रवेश करने लगी। नवम्बर 1989 से जून 1991 तक राजनीतिक माहौल इतना अस्थिर रहा कि उसमे किसी आर्थिक विकास कि संभावना ही नही थी नरसिंह राव के प्रधानमंत्रीत्व काल में 1 अप्रेल 1992 को आठवीं पंचवर्षीय योजना का आरम्भ हुआ जो 1997 तक चली इस अवधि में वित्त मंत्री मनमोहन सिंह द्वारा आर्थिक उदारीकरण कि नीति लागू करने के बाद भारत आर्थिक संकट से मुक्त हुआ। आर्थिक उदारवाद कि नीति के दृडतापूर्वक पालन का देश कि अर्थव्यवस्था पर व्यापक और सुदीर्घ प्रभाव पडा। आर्थिक उदारीकरण के साथ ही उत्तर आधुनिकता और भूमंडलीकरण का दर्शन भारत पंहुचा।

साहित्य समाज का दर्पण है। जैसे-जैसे समाज में राजनीतिक बदलाव आर्थिक समस्याएं परंपरागत रुढियो का दोहन होता है यह साहित्य में भी अपना असर डालता है। रुढियो के दोहन का परिणाम है कि आज स्त्री अपने अधिकारों के लिए खुल कर सामने आ रही है और इसी तरह साहित्य कि गोद में

अनेक विमर्श उत्पन्न हो रहे है। जैसे - स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, वृद्ध विमर्श आदि, कही न कही इन सब में भूमंडलीकरण का ही प्रभाव दिखता है। जहाँ एक ओर सम्पूर्ण भूमंडल के एकीकरण की बात हो रही है वही हम समाज में एकाकी परिवारों की संख्या को भी बढता देख रहे है। जिसकी वजह से वृद्धो के लिए वृद्धाआश्रम बनाये जा रहे है यह कैसा एकीकरण है जो विश्व को तो एक करता है परन्तु परिवारों को अनेक कर देता है। अपने स्त्रीत्व को तलासती स्त्री आज आत्मनिर्भर बनने के लिए जब प्रयास करती है तब उसकी आवाज को दबा दिया जाता है। समाज के ठेकेदारों ने गरीब लोगो का जमकर शोषण किया इस शोषण का शिकार सबसे ज्यादा स्त्री बनती है ऐसा ही उदयप्रकाश कि कहानी 'मैगोसिल'में दिखाई पडता है। दरोगा के कहने पर विल्डर शोभा के घर उसे अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए जाता है रमाकांत (शोभा का पहला पति) शोभा के लिए दलाल ढूढता था जिससे उसे कुछ पैसे मिल जाये और उसे शराब मिल जाये स पुलिस के दरोगा की नजर शोभा पर पड जाती है। जिसके बाद शोभा की जिंदगी नरक से भी भयावह बन गयी स्त्री के शोषण की इतनी भयावह कथा बहुत ही कम दिखाई पडती है। शोभा के साथ हुआ दुव्र्यवहार उपभोक्तावादी संस्कृति का चरम रूप है जहाँ स्त्री भी एक उपभोग की वस्तु रह गयी है।

21वीं सदी में हिंदी कथा साहित्य में मन्नू भण्डारी, ऊषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मालती जोशी, सूर्यबाला जैसे रचनाकार भी पिछली सदी की प्रवृत्तियों पर आधारित सृजन कर रहे हैं। ये अभी भी नारीवाद के दायरे से बाहर नहीं निकल पायी है। ममता कालिया के 'दौड़' में पहली बार भूमंडलीकरण अपने अधिकतम आयामों के साथ प्रस्तुत करता है।

सामाजिक प्रभाव:

एक समय था महिलाएं समाज के केंद्र में थी उन्हीं पर परिवार की पुरी टिकी रहती थी धीरे-धीरे उनकी स्थितियों में परिवर्तन हुआ और वे धर्म-संस्कारों रीतियों और नौतियों के बंधन में कस दी गई। २१वों ने शिक्षा और रोजगार के माध्यम से उन्हें परंपरागत बंधनो से आजाद कराने की कोशिश की आजादी का सपना लिए हुए भूमंडलीकरण द्वारा प्रदान की गई नौकरियों में इन लड़कियों ने प्रवेश तो किया पर यहीं कार्यरत पुरूषों की मानसिकता सोलहवीं सदी वाली ही रही, फलस्वरूप एक नई युवा पीढ़ी, नये रिस्ते और नये संबंधों का जन्म हुआ।

गोरिल्ला प्यार कहानी है दो ऐसे जोड़ों अर्पिता और इंद्रजीत की जो एक दूसरे से बेहद प्रेम करने के बावजूद शादी नहीं करते और इसी तरह साथ-साथ रहते हैं। यह उनका आपसी समझौता था। अर्पिता शादी को बंधन मानती है। वह बँधकर जीना नहीं चाहती। यही सोच लगभग इंद्रजीत की भी थी। यही सोच मिलने के कारण दोनों आपस में काफी घुल मिलकर पती-पत्नी जैसे साथ-साथ रहते पर बंधनी दोनों को स्वीकार नहीं। फिर अचानक दोनो के बीच दीवार बन गयी। अर्पिता ने जिंदगी में कभी हिसाब किताब नहीं रखा था। वह बस इसी तरह जिंदगी गुजार देना चाहती है। उसने इंद्रजीत से बहुत प्यार

किया, उसके अनुसार अनुभूति को भी क्या कभी गिना जाता है, क्या आँसुओं की गणना मुमकिन है, आलिंगन और स्पर्श-सुख को क्या कभी मापा जा सकता है। एक पुरुष एक स्त्री जैसे, वैसे ही अर्पिता और इंद्रजीत अर्पिता जैसी लड़की के लिए स्वच्छंद रूप में जीवन जीना ही सब कुछ है। उसे किसी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं। उसके अनुसार शादी एक बंधन है और वह बंधन में जीना नहीं बाहती। उसकी सोच की धुरी प्रेम है, प्रेम है तो जीवन है। लिव-इन भी उसे मंजूर नहीं। वह जिंदगी अपनी खुशी अपनी मर्जी से जीना चाहती है। अर्पिता को रूटीनी जिंदगी जीना पसंद नही है। वह हमेशा कुछ नया सोचती है और चाहती है। अर्पिता अपनी निजी जिंदगी में मर्द को उतनी ही जगह देगी जितने में उसका अपना अस्तित्व बचा रहे। साथ ही बचा रहे प्रेम। वह जानती है कि जैसे ही मर्द को जगह दी वह मित्र से तुरंत मालिक बन जाता है। लगभग इंद्रजीत की भी सोच अर्पिता जैसी ही थी। जब दोनों के खयालात आपस में साझा हुए तो दोनों की खुशी का पारावार न रहा। फिर एक दिन सब कुछ खत्म हुआ। दोनों की आपसी सोच समझ न जाने कहाँ गायब हो गयी। अर्पिता के ऊपर इंद्रजीत को संदेह होने लगा। उसका पुरूषत्व उसे रोक न पाया और उसने जड़ दिया चाँटा आर्पिता को। और सब सपनों का महल अर्पिता का धराशायी हो गया। अर्पिता जिन चीजों के लिए इंद्रजीत को चाहती थी वही उसके साथ इतना बुरा व्यवहार कैसे कर सकता है? यह सोचते- सोचते अर्पिता लगभग आश्चर्यचकित रह जाती है।

इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने आज के सच को भी उजागर किया है। पुरुषों की इसी संर्कोण विचारधारा का ही परिणाम है कि आधुनिक और स्वतंत्र जीवन की तलाश में स्त्री बहुत आगे निकल चुकी है। पुरुष प्रधान समाज में सिर्फ स्त्री को ही सब समझौते क्यों? यह तो दोनों का कर्तव्य है। सब बराबर के अधिकारी हैं। जरूरत है इस संर्कीणता को खत्म करने की।

इस व्यवस्था में पुराने समाजिक संस्कार अर्थहीन सबित होने लगे और खुद लड़कियों ने ही अपने लिए संस्कारों और मर्यादाओं की एक नई दुनिया बसा ली। प्रार्थना के बाहर कहानी प्रार्थना और रचना दो लड़कियों की यह एक ऐसी कहानी है जो एक साथ एक ही कमरे में रहकर दिल्ली जैसे शहर में अपने-अपने सपनों का पंख लगाये उसे पूरा करने आती है। प्रार्थना रचना के ही कमरे में रहकर आई.ए.एस. की तैयारी कर रही थी। वह रचना की रूममेट थी। स्वभाव से दोनों एक-दूसरे के विपरीत थी। रचना जहाँ सीधी-सादी और शांत स्वभाव की थी, वहीं प्रार्थना हर वक्त मस्ती के मूड़ में रहती, उछलती कूदती रहती थी। साथ- साथ रहते दोनों अच्छी दोस्त बन गयी थीं। रचना स्वभाव से संकोची भी इसके विपरीत प्रार्थना हर बात उसे बेतकल्लुफी से बता देती थी। प्रार्थना को लड़कों के साथ रहने और उनके साथ शारीरिक संबंध बनाने को आम बात मानती थी। इसका पता रचना को तब लगता है जब प्रार्थना के एबासन कराने की बात निकली। यह सुनकर वह प्रार्थना को बहुत भला बुरा सुनाती है और घर से भाग जाने तक कह देती है लेकिन मार्थना भी अड़ जाती है कि जब तक एवासन नहीं हो जाता वह नहीं जाएगी चाहे रचना कुछ भी कर ले। रचना मन ही मन प्रार्थना से नफ़रत करने लगती है उसके इस बुरे कृत्य की वजह से लेकिन वह कर क्या सकती थी? इतना व्यस्त रहने के बावजूद भी प्रार्थना पढ़ाई

करती थी पर रचना से ज्यादा नहीं। प्रार्थना के स्वभाव के विपरीत रचना एक जिम्मेदार लड़की थी। उसने हमेशा अपनी एक अच्छी इमेज बनाई। लेकिन अब उसे अपने अच्छे इमेज पर दुख हो रहा है। वह बार- बार यह सोचने पर मजबूर हो जाती है कि आखिर क्या मिला मुझे अच्छी लड़की बनकर और उसका ध्यान नौ साल पहले उस बुरी लड़की पर चला जाता है जो कभी उसकी रूममेट हुआ करती थी।

उसे आज वो बुरी लड़की शायद अच्छी लग रही थी। आखिर क्या मिला उसे अच्छी और भली लड़की बनकर ? आज वह खुद को कोस रही थी? और क्या न कोसे वह खुद को? आज अखबार में उसने ऐसी खबर पढ़ी जो उसे खुद कोसने पर मजबूर कर देती है। उसे वहीं नौ साल पुरानी घटना याद आती है। पेपर में साफ-साफ अक्षरों में लिखा था आई.ए.एस. प्रार्थना पांडे को उ.प्र. की कैसर पदोजित देकर मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव नियुक्त किया गया है। और उसे क्या मिला १५ हजार रुपल्ली की अखबार की नौकरी जिसकी कोई गारंटी नहीं कि कब चली जाए हाथ से। वहीं प्रार्थना पांडे जो आधा समय सिर्फ लड़कों के साथ गुजारती भी, उनसे हम बिस्तर होती थी आज अफसर बनकर बैठी है। अतीत किसने देखा? इन सब वर्तमान में जीते और भरते हैं। और एक सीधी सन्नी लड़की करे क्या मिला ? बहु सोचती रह जाती है कि क्या आगे बढ़ने के लिए ऐसी कीमत चुकानी जरूरी है? यही सवाल अंत में छोड़ जाती है... यह कहानी

चल भाग जिंदगी से कहानी में अभय की जिंदरी भी कुछ ऐसे ही संदेश देती है-यह कहानी है अभय की जो अपनी जिंदगी की गाड़ी को आगे ले जाने की जद्दोजहद में इतना गिर जाता है। कि उसकी इन्सानियत भी नर जाती है। अभय कहानी का मुख्य पात्र है जो बच्चों का ट्यूशन लिया करता था। उन्हीं बच्चों में एक रचना नाम की लड़की भी पढ़ती थी। जो स्वभाव से बहुत ही तेज थी। उसके लिए पढ़ना लिखना फालतू कान था। और फालतू कामों तथा फालतू लड़कों के साथ वक्त जाया करना ही उसका काम था। बात यहाँ तक बढ़ जाती है कि रचना जब अस्पताल में एबॉर्शन करवाने जाती है तो अभय को उस बच्चे का बाप बताकर डॉक्टर से उसे गिराने को कहती है। अभय उसके इस हरकत पर आश्चर्यचकित रह जाता है और बस देखता ही रह जाता है। अभय की पहली बीवी मर चुकी है। कुछ कह नहीं पाता। वह दी बच्यों का बाप है। परिस्थितियाँ कुछ ऐसी विचित्र बन जाती है कि अभय रचना से दूसरी शादी कर लेता है। शादी करने के बाद रचना की जिंदगी तो सँवर जाती है लेकिन अभय की जिंदगी बिगड़ जाती है। वह रचना की और घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरों की जान तक लेने को उतारू हो गया है। और इसमें उसे थोड़ा भी संकोच नहीं था। वह अपनी इन हरकतों का इतना आदी हो चुका था कि एक दिन उसने उस इंसान की भी हत्या कर दी जो उसे अपने बेटे से बढ़कर चाहती थी। वह महिला थी दर्शन कौर, जिसके नहाँ वह उसकी बेटियों को ट्यूशन पढ़ाने जाया करता था। और दर्शन कौर उस एक ट्यूशन टीचर से बढ़कर समझने लगी थीं।

अभय की बेटी की शादी हो रही है उसकी नौकरी जा चुकी है। इन्हें परिस्थितियों के बीच अचानक एक दिन उसे दर्शन कौर मिल जाती है। वह जबरजस्ती अपने घर ले जाती है और कहती हैं शादी के लिए

उसे उसकी बेटी को कुछ देना चाहती है और गहनों से भरा बक्सा उसके सामने खोल देती हैं। छोटी-छोटी चोरी से तंग आकर अभय सोचता है कि अगर इसे मार हूँ तो पूरा बक्सा है उसका हो जाएगा और वह उसकी हत्या कर देता है।

समाज में ऐसे भी कुछ लोग हैं जो अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी की जान तक लेने में भी संकोच नहीं करते। मनुष्य को अपने आप पर शायद आज भरोसा नहीं रहा, या यह करना ही नहीं चाहता तभी तो आज अभय जैसे लोगों को बढ़ावा मिल रहा है।

कथाकार हुस्न तबस्सुन निहीं की कहानी बनाना नाइट्स वस्तुतः आज के समाज की कहानी है। जहाँ आँचल सिंह जैसी हजारों, लाखों लड़कियों, औरतें आज अपने अस्तित्व सम्मान-सुरक्षा के लिए निरंतर संघर्षरत हैं। यह कहानी है आँचल सिंह की जो आज के पुरुष प्रधान समाज में अपनी स्वतंत्र रूप से जिंदगी जीने के लिए अपने अधिकारों के लिए स्वतन्त्रता की तलाश कर रही है। आज हर जगह चाहे वह अंऑफिस हो स्कूल हो, कॉलेज हो, घर हो हर जगह सिर्फ स्त्री को लेकर ही सवाल खड़े होते हैं। इन्हीं सवालों के बवंडर में घूमतौ आँचल सिंह भी अपने अस्तित्व की तलाश में भटक रही है। जहाँ ऑफिस में रोज उसे अपने बॉस की खिड़कियों सुनने मिलती है जी उसकी पोशाक, पहनावे को लेकर उसे लिखित नेनो थमा देता है। और उसकी पोशाक के साथ उसको अभद्रता का प्रतीक मानता है। क्यों आज का पुरुष प्रधान समाज स्त्री की पोशाक को लेकर इतना गंभीर है। आज अगर वह अपने अंर्तमन को सुधार ले तो शायद स्त्री को यह सब करने की आवश्यकता हो न पड़े। समाज के वे पुरुष जो खुद तो खुलेआम सबकुछ करते हैं और स्त्री के लिए पाबंदी लगाते हैं। बनाना नाइट्स इसी तरह की एक कहानी है। जो बॉस, आँचल सिंह को रोज ऑफिस में उसकी अभद्र पोशाकों के लिए विल्लाता था उसी बॉस की मुलाकात ऑवल सिंह से एक न्यूड पार्टी में हो जाती है। और बॉस के इस रूप की देखकर आँचल सिंह हतप्रभ रह जाती है। यह कहानी समाज के लिये सब को उजागर करती है। आज की दुनिया में ऐसी संकीर्ण विचारधारा के पुरुष ही इस तरह के संकीर्णता को बढ़ावा देते हैं।

गीताश्री की कहानी **एक रात जिंदगी** पंजिम शहर में अकेले जीने को अभिशप्त नारी जीवन की विडंबना की करुण गाथा है। जिसे आज स्त्रियाँ आजादी कहती हैं, दरअसल वह टूटते रिश्तों, टकराते अहम और बिगड़ते सामाजिक परिवेश की देन है अलगाव, विखराव। यह कहानी पंजिम शहर के एक ऐसी महिला की कहानी है जो १९ साल में नताशा डायस से शाइस्ता ओबेराय बनती हुई ५३ साल के रईस आदमी से लिव इन रिलेशनशिप में रहते हुए दो बच्चों की माँ बनती है।

यह कहानी सिर्फ शाइस्ता ओबेराय की कहानी नहीं वरन उसके जैसी न जाने कितनी नताशा कितने शहरों में भोगे जाने के बाद छोड़ दी जाती है। चाहे वह इस कहानी की पात्र डिलाइल हो या फिर कोई और। डिलाइला का भी अपने पति से तलाक हो चुका है और पंजिम में वह अकेले रहती है। जहाँ उसकी

मित्र चैताली दिल्ली से मिलने आई होती है और वहीं पर डिलाइल और चैताली की भेंट शाइस्ता ओबेराय से होती है।

शाइस्ता एक गरीब परिवार से आती है जहाँ घर चलाना मुश्किल हो रहा था पढ़ने की उम्र में उस पर काम का बोझ पड़ता है और वह नौकरी करने को अभिशप्त है। नौकरी की तलाश में वह ओबेराय मेंशन पहुँचती है लेकिन लेट हो जाने की वजह से रिसेप्शन पर बैठा गार्ड उसे रोक देता है। काफी अनुनय-विनय के बाद भी वह जाने देने को तैयार नहीं होता है, अचानक बॉस द्वारा अंदर बुला ली जाती है।

अंदर से बाहर आने के बाद उसकी खुशी मानो आसमान छूने लगती है उसकी सारी मनोकामना पूरी हो जाती है, लेकिन धीरे- धीरे उसे लगने लगता है कि समाज में जीना उतना आसान नहीं जितना कि उसने अनुभव किया था। घर की खराब हालत ने उसे कब सेक्रेटरी से रखैल बना दिया पता न चला, शाइस्ता के माँ के विरोध पर उसका बॉस उससे शादी कर लेता है। समय के साथ दोनों का प्यार भी बढ़ता है लेकिन शाइस्ता के पति के मृत्यु के पश्चात शाइस्ता को सभी अधिकारों से पति के परिवार वाले वंचित कर देते हैं और किस्मत उसे एक बार फिर सड़क पर ला देती है। किसी तरह वह अपने बच्चों को पालती पोसती है कि इसी बीच उसे उसी के उम्र का बुजुर्ग सा आदमी जो देखने में रईस लगता है मिलता है। और यह मुलाकात धीरे-धीरे संबंधों में बदल जाती है अब शाइस्ता अकेली नही थी और न ही उसे पैसों की कोई कमी। उसकी सभी जरूरतें उसका नया ब्वायफैंड पूरा करता है। इस रिश्ते को शाइस्ता खुले मन स्वीकार करती है। क्योंकि परिस्थितियों ने उसे इतना कुछ सिखाया कि अब समाज का डर नहीं वह किसी के साथ रह सकती है। वह अब अपने को आजाद महसूस करती है। किंतु उसके मन में एक दुख क्रोध का घड़ा भरा हुआ है जो वह अपनी कहानी चैताली और डिलाइला से कहती है कि मुझे उन ओबेराय परिवार से बदला लेना है जो मेरा हक नही दे रही उसके लिए मैं अपनी गोपनीय कहानी बेचना चाहती हूँ।

एक ओर आजादी तो दूसरी ओर पुराने संस्कारों की बेड़ियां इन दोनों के बीच पिसती हुई नारी जीवन की कहानियाँ स्त्री विमर्श का मुख्य केंद्र है। बनाना नाईट कहानी के निम्नलिखित उद्धरण इस युग के सबसे बड़े सत्य का साक्षात्कार करते है तू लड़की जात है, तुझे यह जीवन भर सहना होगा। आदत डाल ले, मैं क्या करूँ? भाई है, बड़ा है, वो शासन करेगा ही। शादी के बाद तुझे जो मन आए, करना-पहनना, पति जानें, भाई नहीं रोकेगा। अभी मैं बीच में नहीं पड़ूंगी। जा, जल्दी निकल।[१]

आपको क्या लगता है अपना बॉस बहुत शरीफ आदमी है? साला आए दिन लड़कियाँ मंगाता है, कंप्यूटर पर पोर्न साइट देखता है। आप भी किसकी परवाह करती हैं?[२]

ये हिंदी पत्रकारिता की दुनिया कूपमंडूकों की है। यहां स्त्री अब भी दूसरे दर्जे की नागरिक है। आप जैसी आजाद खयाल स्त्री को यहां हमेशा झेलना पड़ेगा, उठिए, हिम्मत न हारिए, आप बोल्ड हैं, आपको इनका सामना करना चाहिए, खुद को बदलने की जरूरत नहीं।[३]

पिछली सदी में नारी के तमाम बंधनो में सबसे बड़ा बंधन यौन सुचिता का था भूमंडलीकरण ने सबसे पहले इसी बंधन को थोड़ा। अवैध गर्भपात इसकी एक कड़ी है-लेडी डॉक्टर संजीदा थी। उसने अभय की तरफ पलटकर पूछा, आप बच्चा अबॉर्ट क्यों करवाना चाहते हैं? अभय का हाथ दबाया अर्चना ने और खुद ही जवाब भी दिया हमें इतनी जल्दी बच्चा नहीं चाहिए। तीन साल बाद करेंगे। अभी हम विदेश जा रहे हैं, वहाँ कहाँ लेकर घूमते रहेंगे बच्चा।[४]

तलाक उसका दूसरा चरण है-आज उनका डिवोर्स हो गया है। सामने टेबल पर कोर्ट ऑर्डर पड़ा है। उसे शायद खुश होना चाहिए-डिवोर्स उसी ने मांगा था, मगर अंदर एक स्तब्ध चुप्पी दीवार की तरह अडोल खड़ी है।[५]

स्त्री-विमर्श की अधिकांश कहानियाँ समाजिक स्तर पर फिलहाल बंधनो से मुक्ति की छटपटाहट में संघर्ष कर रही है इससे मुक्त होने में फिलहाल उन्हें थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा।

सांस्कृतिक प्रभाव :

प्रस्तुत शोध पत्र में पहले यह स्थापित किया जा चुका है कि संस्कृति का मूलाधार नारी हुआ करती थी उसी के इर्द-गिर्द संस्कृति की संरचना विकसित हुई किंतु २१वीं में संस्कृति का यह केंद्र बुनियादी रूप से बदल रहा है। जिस रसोई में नारी का एक क्षत्र साम्राज्य हुआ करता था उसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने सेंध लगा दी है ये चाउर ... चौ... चौमीन क्या हुई ? वो...। पेस्.. पेस्.. पेस्टर... ई सॉफ्टी, पेप्सी। टिंकू, पिंटू, मिंटू, रिंकू, गुनगुना उठे। हवाएँ इधर से छेड़ती उधर से छोड़तीं... गुद... गुद.. गुद.. गुदगुदी। टिंकू पानी पीते-पीते दीवार से केहुनी और कमर टिकाकर खड़ा हो जाता-ये दिल माँगे मोर..आ.. हा.. हा पड़ोस की दीवार के ताखे पर रखे टेलीविजन में फिल्मी गानों, धारावाहिकों, फिल्मों और तो और क्रिकेट मैचों के मुकाबिल विज्ञापनों को पहली बार बढ़त प्राप्त हुई।

विवाह एक सांस्कृतिक परिघटना हुआ करती थी पर अब वह हादसे में रूप में पेश आती है। जयश्री राय की कहानी एक रात स्त्री मन की अंर्तद्वंद्वता को झेलती हुई एक ऐसी स्त्री की कहानी है जिसकी बहु कम उम्र में शादी हो जाती है। चौदह वर्ष की उम्र में मंदिरा की शादी हो जाती है। छह फुट लंबा परि मंदिरा को यह समझे कि वह क्या सोचती है। रौद डालता है। जिसे समाज सुहागरात की संज्ञा देता है उसे मंदिरा अब बलात्कार कहती है।

मणिकेरी के छोटे से डाकबंगले में अपने लेखक मित्र जिससे कुछ ही घंटों पहले मिली थी टकीला की बोतल के साथ चाँदनी रात में अपने जीवन की कहानी सुनाती है। छोटी सी उम्र में शादी हो जाने के बाद सामाजिक दबाव को झेलना मंदिरा के लिए असह्य हो जाती है। पहली रात को जब उसका पति उसे रौंद रहा था तब मंदिरा जानती थी कि चिल्लाने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि उसे कोई बचाने नहीं आएगा और सुबह के समय घर की बूढ़ी औरतें द्वारा बिस्तर का मुआयना करना जिस पर अब भी

खून के धब्बे पड़े दिख रहे थे, औरतों को खुश देखकर मंदिरा डर सी जाती है। समय के साथ मंदिरा अपने वहशी पति को नहीं झेल पाती और एक दिन नशे की हालत में अपने पति का हाँथ पांव बांधकर उससे अपना बदला चुकता कर अपने मामा के यहाँ लंदन चली जाती है।

इस समय वह भारत घूमने आती है और अपने कुछ घंटे वाले लेखक मित्र से अपनी जिंदगी की तस्वीर खोलती चली जाती है। टिकली के नशे के साथ मंदिरा के शरीर के धमनियों में लहु उमड़ने लगता है। और अपने लेखक मित्र को एक सम्मोहन भरी निगाहों से देखती है। लेखक और मंदिरा के बीच की दूरी कम होती चली जाती है और प्रेम के इस अधूरेपन को भरने के प्रयास में मंदिरा लेखक मित्र को अपने आगोश में भर लेती है। लेकिन कुछ ही छड़ों बाद उसे हटा देती है। मंदिरा कहती है कि इसके बाद की जो प्रक्रिया है उसे मैं नहीं कर सकती उसे सहेजना चाहती हूँ, उसे पाना चाहती हूँ कि दिन के उजाले में कभी मिल सके तो नजरे झुका कर न जाना पड़े। हम नजरे मिलाकर एक दूसरे को देख सके। अभिनंदन कर सके।

जयश्री राय की एक रात कहानी की कथावस्तु एक ऐसी लड़की की कथा-गाथा है जो जिंदगी को जीना चाहती है और उसके लिए वह उन तमाम सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर एक नई आजाद स्त्री की तरह जीती है। विवाह के नाम पर ही प्यार का सौदा भी इस युग की प्रमुख विशेषता बन चुका है।

हुसन तबस्सुम निहा की नीले पंखों वाली लड़कियाँ कहानी की शुरूआत में लड़कियों के स्वतंत्र रूप को चित्रित किया गया है कि किस तरह वह आगे बढ़ रही है। पढ़ाई कर रही है साथ ही साथ प्रेम पत्र भी लिख रही है। रजिया बहुत खुश है। खुशी के मारे वह भागी जा रही है। अचानक उसका पैर कीचड़ में पड़ जाता है पैर साफ कर वह शीशम के नीचे बैठ कर चारों दिशाओं में देखने लगती है। मानों उसकी निगाहें किसी को खोज रही हों। वह कभी घड़ी देखती, कभी मोबाईल, बार-बार रीडायल करने पर भी एक ही आवाज- इस समय उपभोक्ता के नंबर पर कॉल संभव नहीं है कृपया .... उसके बाद रजिया स्टेशन पर जाकर बैठती है उसे लगता है शायद रोहित उसका वहाँ इंतजार कर रहा होगा। लेकिन स्टेशन पर भी कोई ना था।

रजिया टिकट लेने के लिए कतार में खड़ी होती है लेकिन जाना कहाँ है पता नहीं। शौचालय के समीप वाली सीट पर जा कर बैठ जाती है। कहीं-कहीं रजिया को अब डर भी लग रहा था कि कहीं उसके घर वाले ना आ जाये।

रजिया ने घर पर एक लंबा सा खत दे रखा था। जिसमें रानी की प्रेम कहानी का अंत किस प्रकार उसके बाबा ने किया। कारण यह देकर कि वह नीची जाति का है। लेकिन वह रानी को कितना खुश रखता था। रानी की शादी आबिद नाम के लड़के से हुई। वह उसे रोज धक्के-मुक्के, लात-घूंसे खाने पड़ते थे। एक दिन अशरफ (रानी का प्रेमी) ने रानी के घर के दरवाजे पर ही आत्मदाह कर दिया। जिससे आबिद गुस्से से खौल गया और रानी को खूब पीटा वह पिटी-पिटाई भीतर ही भीतर झुलसती रही।

इतना ही नहीं विवाह के वाद भी स्त्री को अपनी मर्जी से जीने के बजाए अपने आप को व्यवस्था के अनुरूप ढालना पड़ता है। 'बीस साल पहले वह गहने और सिंदूर से दिपदिपाती हुई इस देश में आई थी, साथ में थे ढेरों सपने और उन्हें पूरे करने के वे सातों वचन जो उसे अपने जीवनसाथी से एक महीने पहले शादी के मंडप में मिले थे। वही उसका संबल था, जिसे सहेजे वह इस पराई जमीन पर अपना घर बाँधने आ गयी थी-अपनी पूरी आस्था और यकीन के साथ। तब उसे पता नहीं था, बहते हुए साहिल से ठिकाना माँगने का नतीजा बिखराव के सिवा और कुछ भी नहीं होता, हो नहीं सकता। उसके लंबे बाल कतरवा दिये गये, साड़ी छुड़वा दी गयी। पार्टियों में जींस पहने, हाथ में वाइन का गिलास लिए वह स्वयं को ही पहचान नहीं पाती।[६]

हमारा सांस्कृतिक माहौल इस कदर बदल गया है कि उसमें अपने-आप को एडजेस्ट करने के सिवा अब कोई संभावना नहीं बची है- 'पंद्रह वर्ष की बेटी उसी के सामने उसके मेडिसन कैबिनेट से बर्थ कंट्रोल पिल निकालकर बिंदास गटकती और वह कुछ नहीं कह पाती। बेटा कार पार्किंग में घंटों अपनी गर्ल फ्रेंड के साथ कार में बंद पड़ा रहता है अपर वह चुपचाप देखती रह जाती है। कई बार पूरी रात इंतजार में कट जाती थी, मगर बच्चे अपने माँ को एक फोन करने की भी जहमत नहीं उठाते हैं। पूछने पर वही जवाब मिलता था, वी आर नाउ बिग मॉम, स्टॉप वरिंग, हम अपना खयाल रख सकते हैं। पार्टी, डांस, हॉली डे का सिल सिला कभी थमता ही न था। यहाँ आकर उसने यहां की सुख सुविधाएं देखी थीं, अब यहां के चलन और संस्कृति को भी झेलना था।[७]

गीताश्री की कहानियों की ये अंश हमारी सांस्कृतिक पतन की संभावना नहीं बची कोई स्त्री इतनी जल्दी कैसे नंगी...? वह तो बेडरूम में नहीं हो पाई आज तक, आशा को कोई भय, संकोच शर्म नहीं। महाबोल्ड स्त्री की परिकल्पना से आंचल कंपकपा गयी। आजादी तो चाहती थी, मगर ऐसी नहीं कि जिसमें नंगेपन का सार्वजनिक प्रदर्शन करना पड़े।[८]

न्यूड पार्टी न्यू कान्सेप्ट है। यहा संब नंगे हैं। जहाँ सब नंगे हो, वहाँ क्या समस्या। सब नंगे, सब एक बराबर, कौन किसके बारे में बोलेगा? क्या ? तेरा बाप भी यहाँ हो तो कुछ नहीं करेगा चल।[९]

इस पर अपना सतीत्व सिद्ध करने के लिए अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है... तेरे पुरखों की लाज अब तेरे हाथों में हैं.. मुझे काटो तो खून नहीं! मामू की चुम्मी, दूसरे बच्चों के साथ गर्मी की दुपहरों में डॉक्टर-डॉक्टर खेल और मास्टरजी की दुलार-भरी धौल धप्प सब एक साथ याद आ गए थे... ऐसा नहीं है कि समस्त हिंदी प्रदेश में अथवा जहाँ हिंदी कहानियाँ गढ़ी जा रही है वहाँ मात्र यही समस्याएँ है किंतु हमारी महिला कथाकार संभवतः अभी तमाम समस्याओं की जड़ों तक पहुँचने की कोशिश में है या कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि भूमंडलीकरण पर लिखी जानेवाली कहानियाँ कही खुद तो भूमंडलीकरण का शिकार तो नहीं हो रही है? यौवनता मूलक वर्णन नाजायज और अनैतिक संबंधों का

विस्तार दैहिक स्वतंत्रता को अनावश्यक रूप दे दिया गया महत्त्व कहीं कथा लेखन के बाज़ार में स्थापित होने की कोशिश तो नहीं है। फिलहाल अभी निर्णय हो पाना जल्दबाजी होगी।

सन्दर्भ सूची :

१. गीताश्री , बनाना नाइट, हिंदी कहानी का युवा परिदृश्य, पृ.४७

२. वही.पृ.४७

३. वही., पृ.४९

४. जयंती रंगनाथन, चल भाग जिंदगी से -हिंदी कहानी का युवा परिदृश्य, पृ.७३

५. जयश्री रॉय, अपनी तरफ लौटते हुए, हिंदी कहानी का युवा परिदृश्य, पृ.२७

६ वही., पृ.३१

७. वही., पृ.३४

८. गीताश्री , बनाना नाइट, हिंदी कहानी का युवा परिदृश्य-प.५५

९. वही., पृ.५५